जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड,
सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
ऑफिस मो. : ८२६२०५६४८०
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५७ वे ❖ अंक ८ वा ❖ एप्रिल २०२६ ❖ वीर संवत २५५२ ❖ विक्रम संवत २०८२

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● आधुनिक युग और भगवान महावीर	२३	● नफरत V/s प्यार	८२
● तीर्थंकर महावीर की शिक्षा	२४	● निगोद जीव	९१
● महावीर के संदेश है हिरे-मोती	२५	● श्रावक के २१ लक्षण	९६
● तीर्थंकर महावीर का मानवता को अवदान	२७	● जिनवाणीचे सार काव्यातून – अप्रमतत्ता	९७
● भगवान महावीर के संदेश नितांत आवश्यक	३१	● स्व के निर्माण कर्ता : भगवान महावीर	९९
● तीर्थंकर महावीर के चरणों में	३३	● छोटी सी बातें	१०१
● कव्हर तपशील	३४	● मोक्ष मार्ग की राह – उत्तराध्ययन सूत्र	१०२
● प्रेरक कहानियाँ	३४	● बादशाह और सेवक	१०३
● ।। जिनेश्वरी ।।		● दिव्यत्वाची जेथे प्रचिती	१०५
अध्याय ५ – अकामरणीय	४३	● समस्त लोक के गुरु महावीर जयवंत है	११५
● धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा	४८	● बिखरे मोती	११६
● भगवान महावीर जीवन के प्रश्नोत्तर	४९	● पापी से नहीं, पाप से करें घृणा	११७
● बिने जाने कित जाऊँ – प्रश्नोत्तरी प्रवचन	५५	● हास्य जागृती	१२१
● आओ दुर्ध्यान छोडें – २३ : निदान ध्यान	६७	● अप्पा से परमप्पा	१२३
● जागृत विचार	७६	● छलकणों नहीं	१२४
● महावीर का वीतराग दर्शन	७७	● वन मिनीट प्लीज	१२७

- पहचान से जुडा है धर्म १२८
- जियो और जीने दो १२९
- धारीवाल – रक्तदान शिबीर १३१
- सौ. सीमा गांधी – काव्यसंग्रह प्रकाशन १३२
- शोभाजी धारीवाल – पुरस्कार १३३
- डॉ. धीरज – डॉ. ममता जैन, दुबई १३४
- आज भोजन बदला हुआ है १३४
- स्वस्थ शरिरासाठी आयुर्वेदाची भूमिका १३५
- दुगड ग्रुप, पुणे – रक्तदान शिबीर १३६
- कर्जदाराच्या परतफेडीची क्षमता तपासा १३७
- दि पूना मर्चन्टस् चेंबर, पुणे १३९
- डॉ. दिलीप धींग – सीआईसीटी को पत्र १४०
- तीर्थ – प्रशिक्षित मॅनेजर मिलेंगे १४१
- सुविचार १४१
- विवाह १४२
- सौ. चंचला कोठारी – पीएच.डी. १४३
- रु. १,९९,००० लग्न लावून देणार १४३
- आपुलकी – Cancer Speciality Hospital, पुणे १४४
- सन्मति तीर्थ – प्राकृत कोर्सेस १४५
- नामको हॉस्पिटल – नाशिक १४७
- गुरु आनंद तीर्थ – चिचोंडी १४८
- अरिहंत जागृती मंच, पुणे – निबंध स्पर्धा १५१
- जैन रत्न हितेषी श्रावक संघ १५२
- न्याती एलेनॉर, पुणे – खनन विधी १५५
- श्री. गिरीशजी पारख, लोणावळा १५५
- विश्व नवकार दिवस १५७
- आपल्या आयुष्यातील Delete बटणाचं महत्त्व १६१
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति – ''मॅगझिन पोस्ट'' सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र साठी)

*** वार्षिक वर्गणी – रु. ८०० * त्रिवार्षिक वर्गणी – रु. २३००**

जैन जागृति – ''मॅगझिन पोस्ट'' सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र बाहेर)

*** वार्षिक वर्गणी – रु. ९०० * त्रिवार्षिक वर्गणी – रु. २६००**

''मॅगझिन पोस्ट'' द्वारा बंद पाकिटातून मासिक घरपोच पोहचण्याची १००% हमी.

या अंकाची किंमत ५० रु. • **Google Pay - M. 9822086997**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

आधुनिक युग और भगवान महावीर

लेखक : पं. दलसुख मालवणिया

विज्ञान और धर्म :

विज्ञान ने अपने प्रारम्भ में तो धार्मिक मान्यताओं का विरोध किया था और समझा जाने लगा था कि विज्ञान और धर्म का कभी मेल नहीं हो सकता । एक अंश में यह बात सत्य भी थी क्योंकि पश्चिम में ही इस विज्ञान का उदय हुआ और वहाँ धर्म का तात्पर्य था केवल ख्रिस्ती धर्म और उसकी मान्यताओं से था । किन्तु जब पश्चिम के विद्वानों को भारतीय विविध धर्मों और उनकी परस्पर विरोधी मान्यताओं का परिचय होने लगा तो पहले यह स्थिति थी कि जो धार्मिक मान्यताएँ ख्रिस्ती धर्म से अनुकूल थी उन्हें तो वे धर्म के क्षेत्र में सम्मिलित करने को राजी हो गये किन्तु जैन और बौद्ध जिनकी ईश्वर विषयक मान्यताएँ ख्रिस्ती और कुछ वैदिक धार्मिक सम्प्रदायों से भी विरुद्ध थी, उन्हें धर्म कैसे कहा जाय यह उनकी समझ में नहीं आया । किन्तु जैसे धर्म की विविधता और उनमें ध्येय की एकता जब उन्होंने देखी तो वे जैन और बौद्ध धर्म भी धर्म हो सकते हैं और धर्म हैं ऐसा मानने लगे । अब किसी को सन्देह नहीं रहा है कि जगन्नियंता और जगत्कर्ता ईश्वर को न मान कर भी धार्मिक बना जा सकता है और इसलिए विज्ञान और धर्म में दिखाई देने वाले विरोध की खाई कम हो गई है ।

बाहरी भटकाव बनाम अन्तरजगत् की खोज :

विज्ञान ने जब तक विशेष ध्यान बाह्य जगत् के निरीक्षण-परीक्षण में दिया है किन्तु अब जब वह बाह्य जगत् की मूल शक्ति की शोध तक पहुँच गया है तब उसका विशेष ध्यान अन्तर जगत् की ओर गया है । विज्ञान ने सुख-सुविधा के अनेक साधन जुटा दिए, इतना ही नहीं, किन्तु विकास के भी चरम सीमा के साधन जुटा दिए है । परिस्थिति यह हुई है कि किसी एक अंगुली के गलत चलने पर अणुबम का विस्फोट होकर मनुष्य जगत् का क्षण भर में विनाश हो सकता है। वैज्ञानिकों ने इस मानव भक्षी तो क्या समग्र जीव भक्षी राक्षस को पैदा तो कर लिया अब उसे कैसे काबू में रखा जाय, यही समस्या पैदा हो गई है । चन्द्र और उससे भी परे मनुष्य पहुँच गया किन्तु अब उसे मालूम हुआ है कि वह बाहर ही भटक रहा है । उसने अपने भीतरी तत्त्व का तो निरीक्षण-परीक्षण किया ही नहीं । और जब तक वह इस अन्तर-जगत् की खोज नहीं करता मानव या जीव जगत् की जो समस्या है उसका हल उसे मिल नहीं सकता है । अतएव वह अब अन्तर जगत् की खोज में लगा है । दिमाग और मन की शोध भी वह कई वर्षों से कर रहा है । किन्तु जो रहस्य खुल रहे हैं उनसे यह संतुष्ट नहीं है । इन दिमाग और मन दोनों से भी परे कोई तत्त्व है उसे ही खोजना सब वैज्ञानिकों ने ठान लिया हैं । वैज्ञानिक अपनी इस खोज में भी सफल होंगे ही और किसी न किसी दिन वे अन्तरर्जगत् के रहस्य को भी सुलझा देंगे, ऐसा हमें विश्वास करना चाहिए । जब तक वे उसमें सफल नहीं होते तब तक हमें राह देखकर बैठे नहीं रहना है मानव समाज की जो समस्याएँ है उन्हें धर्म किस प्रकार सूलझा सकता है, इस पर विचार करना ही चाहिए । यहाँ तो आधुनिक युग की समस्या के हल के लिए भगवान महावीर का क्या सन्देश है यह देखना है।

महावीर की देन – आत्मनिर्भरता की साधना :

धार्मिक जगत को सबसे बड़ी कोई देन है तो वह भगवान महावीर ने दी है वह है आत्मनिर्भरता । आज का वैज्ञानिक ईश्वर से छुट्टी ले रहा है । 'God is dead' का नारा बुलन्द हो रहा है किन्तु आज से ढाई हजार वर्ष

पूर्व भगवान महावीर का उपदेश ही नहीं किन्तु आचरण भी इसी नारे के आधार पर था । उन्होंने जब साधना शुरु की तब ही अपनी साधना के लिए अकेले नि:सहाय होकर साधना करने की प्रतिज्ञा की । इन्द्र ने उनकी साधना काल में मदद करना चाहा किन्तु उन्होंने इंकार कर दिया और कहा कि अपनी शक्ति पर अटल विश्वास के बल पर ही साधना की जा सकती है । साधना भी क्या थी ? कोई ईश्वर या वैसी बौद्ध शक्ति की भक्ति और प्रार्थना नहीं किन्तु अपनी आत्मा का निरीक्षण ही था । अपनी आत्मा में रहे हुए राग और द्वेष को दूर कर आत्मा को विशुद्ध करने की तमन्ना थी । इसी तमन्ना के कारण ये नाना प्रदेशों में अपने साधना काल में घूमते रहे, जिससे यह कोई शायद ही जान सके कि वह तो वैशाली का राजकुमार है इसे सुख-सुविधा दी जानी चाहिए । दूर-सुदूर अनार्य देश में भी घूमे जहाँ उन्हें नाना प्रकार के कष्ट दिए गए । अपनी आत्मा में साम्यभाव कितना है इसका परीक्षण के लिए वे जान बूझकर अनार्य देश में गये थे और विशुद्ध सुवर्ण की तरह अग्नि से तप कर वे आत्मा को विशुद्ध कर पुन: अपने देश में लौटे । यही उनकी आत्मनिर्भरता की साधना थी । जो उनके उपदेशों में भी है ।

उनका उपदेश जो 'आचारांग' में संग्रहीत है, उसका प्रथम वाक्य है - जीव यह नहीं जानता कि वह कहाँ से आया है और कहाँ जाने वाला है ? जो यह जान लेता है कि यह जीव नाना योनियों में भटक रहा है वही आत्मवादी हो सकता है, कर्मवादी हो सकता है, क्रियावादी हो सकता है, लोकवादी हो सकता है । पुनर्जन्म की निष्ठा कहो या आत्मा के शाश्वत स्थिति की निष्ठा, इस वाक्य में स्पष्ट होती ही है । साथ ही कर्म और लोक के विषय में उनकी निष्ठा भी स्पष्ट होती है। सारे संसार में जो कुछ हो रहा है वह जीव के कर्म और क्रिया के कारण ही हो रहा है । कोई ईश्वर संसार का निर्माण नहीं करता । जीव अपने कर्म से ही अपने संसार का निर्माण करता है यह तथ्य जीव को आत्मनिर्भर बनाता है । कर्म करना जैसे जीव के अधीन है वैसे कर्म से मुक्त होना भी जीव के अधीन है किसी की कृपा के अधीन जीव की मुक्ति नहीं ।

सर्वसाम्य का मूल : त्याग और संयम :

आज के व्यावहारिक जगत् में भी आत्मनिर्भरता का यह सिद्धान्त अत्यन्त उपयोगी है । अरबों ने तेल की नई नीति अपनाई तो सारा विश्व काँप उठा है, परेशान है और आत्मनिर्भर कैसे बना जाए इसके लिए नाना उपाय सोचे जा रहे हैं । इससे एक बात तो स्पष्ट हो ही जाती है कि आत्मनिर्भर बनना हो तो संयम अनिवार्य है । अपने उपयोग में आने वाली वस्तुओं का अनिवार्य होने पर ही उपयोग करना यह संयम नहीं तो और क्या है ? इसी में से जीवन में संयम की आवश्यकता महसूस होकर व्यक्ति संयम की ओर अग्रसर होता है, राष्ट्र और समाज भी संयम की ओर अनिवार्य रुप से अग्रसर होता है । इसी संयम को यदि जीवन का ध्येय मान लिया जाए तब वह आगे जाकर जीवन की साधना का रुप ले लेता है और त्याग प्रधान जीवन की ओर अनिवार्य रुप से प्रयाण होता है । यही साधुता है, यही श्रमण है । भगवान् महावीर के इस मौलिक सन्देश की आज जितनी आवश्यकता है, कभी उतनी नहीं थी ।

तीर्थंकर महावीर की शिक्षा

- **जियो और जीने दो**
  सभी प्राणी समान हैं ।
- **मनुष्य की श्रेष्ठता जन्म से नहीं,**
  उसके कर्म से होती है ।
- **हर आत्मा अपने आत्मगुणों का**
  विकास करके
  परमात्मा बन सकती है ।
- **अहिंसा, सत्य और संयम ही**
  जीवन के मूलाधार है ।

महावीर के सन्देश है हीरे–मोती

लेखिका : आचार्य चन्दना

कांटो के बीच जब गुलाब खिलता है तो सारे परिसर को सौन्दर्य और सुगन्ध से भर देता है। वह खुद तो खिलता ही है वातावरण को भी खिला देता है। मानवजाति के इतिहास में भी खिला था एक पुष्प ढाई हजार वर्ष पूर्व। वह काँटों के बीच मुस्कुराया था। उसे मिटाने को कोई कम प्रयत्न नहीं हुए थे। किन्तु वह नहीं मिटा। आंधी–तूफानों के बीच वह सदा मुस्कुराता रहा, सुगन्ध बिखेरता रहा। उस सुगन्ध से आज भी मानवमन सुगन्धित है।

हमारे चिन्तन में से अगर महावीर को निकाल दिया जाय तो हम शून्य हो जायेंगे। आज जो हमारे पास वैचारिक समृद्धि और आचार की सुन्दरता है वह प्रभु महावीर की देन है। तीर्थंकरों की देन है। भले ही आज वे स्थूल शरीर रूप से हमारे सामने नहीं है। लेकिन मानव सभ्यता का अस्तित्व आज भी उनकी सुगन्ध से सुगन्धित है । जैसे इत्र की रिक्त शीशी भी वातावरण को सुरभित कर देती है। भगवान महावीर के चिन्तन की सुगन्ध आज भी हमारे सम्पूर्ण वातावरण में विद्यमान है। विगत कई शताब्दियों से हम अपने अस्तित्व के लिए बराबर संघर्षरत रहे हैं। जिन परिस्थितियों में से समाज को गुजरना पड़ा है। कोई भी अनभिज्ञ नहीं है। फिर भी आज जैन समाज की सर्वत्र प्रतिष्ठा है कि जैन है तो अहिंसक है। जैन अच्छे लोग होते हैं। जैन परस्पर में सहयोग की भावना वाले होते हैं। जन साधारण में जैनों के प्रति ऐसी मान्यता और प्रतिष्ठा है।

जैनों की संख्या भले ही कम है किन्तु प्रतिष्ठा व्यापक है । जैन सर्वत्र फैले हुए हैं। भारत का कोई प्रान्त ऐसा नहीं है जहाँ जैन नहीं है। जैनों ने ऐतिहासिक स्तर पर अनेक सामाजिक एवं धार्मिक कार्य किये हैं। क्रान्तियाँ की हैं, परिवर्तन किये हैं, अन्धश्रद्धाओं के उन्मूलन के प्रयास किये हैं। आज भी जैन इसी दृढधारणा के साथ आगे बढ़ रहे हैं कि किसी का भी उत्पीड़न न हो, सभी शान्ति से रहे। भगवान महावीर का ऐसा यह पुनीत जीवन दर्शन है, एक अनमोल मणिमुक्ता के समान परम पावन संदेश है – ''**मेत्तिं भूएसु कप्पए**'' प्राणीमात्र के प्रति मैत्री का भाव रखो । यह संदेश तलघर में छुपाकर रखने के लिए नहीं हैं। बल्कि सर्वत्र इसका प्रकाश फैलना चाहिए। ''**परस्परोपग्रहो जीवानाम्**'' हमें उपयोगी बनना है उपद्रवी नहीं। प्रभु महावीर की देशना के ऐसे अनेकों मणिमुक्ता के समान संदेश है जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को प्रकाशित करने में समर्थ है। प्रभु महावीर के जन्म कल्याणक के अवसर पर इन हीरे–मोती जवाहरात स्वरूप संदेशों को बिखेरना है सर्वत्र! ताकि सब लाभान्वित हो सके। सब सुखी हो सके।

''सुखी रहे सब जीव जगत के,
कोई कहीं न घबरावें।''

आज प्रभु महावीर के जन्म कल्याणक का शुभ अवसर है। ऐसे परम पावन अवसर पर भक्त भगवान के चरणों में अपनी सहज श्रद्धा के पुष्प चढाये बिना कैसे रह सकता है। जल से भरा मेघ गरजे और मयूर चुप बैठा रहे यह कैसे हो सकता है? हमें प्रभु चरणों में पूरी श्रद्धा समर्पित करनी है, भक्ति अर्पित करनी है। वीरायतन का कार्य पूरी शक्ति के साथ प्रगति कर रहा है एवं रचनात्मक कार्य करने में प्रयत्नशील है। सर्वकल्याण की भावना से अग्रसर हो रहा है। क्योंकि वह वीर–महावीर का आयतनस्थान है। ●

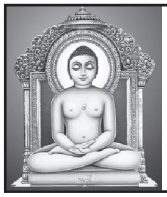

तीर्थंकर महावीर का मानवता को अवदान

कविरत्न : डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई. मो. : ९४१४४७२७२०
(पूर्व निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत केन्द्र)

ईसवी पूर्व ५९९ की घटना। चैत्र शुक्ल त्रयोदशी की मध्य रात्रि में वैशाली के क्षत्रियकुण्ड ग्राम में मानो सूर्य ही उदित हुआ। महारानी त्रिशला के पुत्र जन्म का मंगल सन्देश देने के लिए दासी प्रियंवदा राजा सिद्धार्थ के पास पहुँची तो उसे दास-कर्म से मुक्त कर दिया गया। कहने को तो अभी वर्धमान का जन्म हुआ ही था; किन्तु अपने निमित्त से मानवीयता और स्वतन्त्रता का सन्देश दे दिया था उस अनाम किन्तु सर्वनाम शिशु ने।

जैन धर्म के २४ वें और अन्तिम तीर्थंकर महावीर का सम्पूर्ण जीवन सभी प्राणियों के उत्कर्ष एवं मानवीय स्वतन्त्रता के लिए समर्पित था। आचरण में अहिंसा, विचारों में अनेकान्त, व्यवहार में अपरिग्रह और भेद-विज्ञान मूलक तप, यह उनके धर्म-दर्शन का सार है। जिसका विस्तार असीम और अनन्त है।

धर्म का स्वरूप :

वह समय था जब मनुष्य धर्म के नाम पर कोरे क्रिया-काण्डों द्वारा देव-पूजा तो बहुत करता था किन्तु मानव-मानव के बीच एक्य और आदर नहीं के बराबर था। वर्ण-व्यवस्था जातिवाद का रूप ले चुकी थी। नारी को उसके धार्मिक-सामाजिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। भगवान महावीर ने कहा -

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो,
देवा वित्तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।

अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म उत्कृष्ट मंगल है। जो व्यक्ति अहिंसा, संयम और तप की आराधना करता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

मानवता की प्रतिष्ठा :

मनुष्य की कम होती गरिमा की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए भ. महावीर ने मानवीय एकता तथा मनुष्य की सामाजिक-आत्मिक स्वतन्त्रता का उद्घोष किया। मनुष्य-भव को देव-भव से भी दुर्लभ बताया। मनुष्य अनन्त सम्भावनाओं का धनी होता है। केवल मनुष्य ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है। चूँकि नारी भी मनुष्य ही है, इसलिए वह भी धर्म-साधना करने की तथा मोक्ष प्राप्त करने की अधिकारिणी है। तीर्थंकर महावीर ने अपने तीर्थ में नारी को श्रमणी एवं श्राविका के रूप में सम्मिलित किया। उनके धर्म-संघ में जात-पाँत और ऊँच-नीच का कोई भेद नहीं था। उत्तराध्ययन-सूत्र में उन्होंने स्पष्ट कहा ।

कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ,
वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा।

मनुष्य कर्म से ब्राह्मण होता है, कर्म से क्षत्रिय होता है, कर्म से वैश्य होता है और कर्म से ही शूद्र होता है। नोबेल विजेता साहित्यकार जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने कहा था कि सिर्फ जैन धर्म ही है जो कहता है । मनुष्य भगवान बन सकता है; आत्मा परमात्मा बन सकता है।

समता के प्रवक्ता

तीर्थंकर महावीर के समवसरण में समता का अखण्ड साम्राज्य होता था। न केवल मानव अपितु पशु-पक्षी और देवगण भी उसमें उपस्थित होते थे। चूहे-बिल्ली, शेर-हिरण, साँप - मयूर जैसे जन्मजात वैरी भी निर्वैर, शान्त और मैत्रीपूर्ण हो जाते थे। उनकी समता अहिंसामूलक और अहिंसा समतामूलक थी। उनकी अहिंसा का अर्थ है - अपनी पूर्णता में विश्वास और दूसरों की पूर्णता में भी विश्वास। इस संबंध में प्रभु महावीर को समर्पित मेरा मुक्तक-

न्याय के लिए नैतिकता का नीर चाहिए ।

सत्य के लिए समता का समीर चाहिए।
विश्व खड़ा है विनाश के कगार पर,
अहिंसा के अवतार प्रभु महावीर चाहिए।

अहिंसा के पर्याय

कुछ व्यक्ति कहते हैं, महावीर ने इसका विरोध किया या उसका विरोध किया। वस्तुतः उन्होंने सिर्फ हिंसा का प्रतिवाद किया। भगवान महावीर ने अहिंसा की अत्यन्त सूक्ष्म, नितान्त मौलिक, बहुआयामी, तर्कसंगत और वैज्ञानिक व्याख्या की। उन्होंने अहिंसा पर इतना जोर दिया कि महावीर, जैन धर्म और अहिंसा एक दूसरे के पर्याय हो गए । उनकी अहिंसा पूर्ण व्यावहारिक और उपादेय है। वर्तमान समय में वह सर्वाधिक प्रासंगिक हो चुकी है। व्यष्टि से लेकर समष्टि तक की समस्त समस्याओं का समाधान अहिंसा से सम्भव है।

निरस्त्रीकरण के उद्घोषक

जैसे हमें हमारी जान प्यारी है, वैसे ही सबको अपनी जान प्यारी होती है। इसलिए किसी भी प्राणी के प्राणों का हनन नहीं करना चाहिए। सच्चा बुद्धिमान कभी किसी की हिंसा नहीं करता। सूत्रकृतांग का प्रेरक वाक्य है- एयं खु नाणिणो सारं जं न हिंसई किंचण। ज्ञानी होने का, शिक्षित होने का सार है- किसी जीव की हिंसा नहीं करना। भ. महावीर की अहिंसा के फलित हैं- करुणा, शाकाहार, समता, सौहार्द्र, सर्वोदय, सह-अस्तित्व, प्रेम, पर्यावरण सुरक्षा, पारिस्थितिकी-सन्तुलन, विश्व-बन्धुत्व, लोकतन्त्र, अनाक्रमण, निःशस्त्रीकरण, अयुद्ध आदि। आचारांग सूत्र में महावीर कहते हैं - शस्त्र तो एक से बढ़कर एक हैं किन्तु अशस्त्र और अहिंसा से बढ़कर कुछ नहीं है।

सामुदायिक मूल्यों के संस्थापक

भ. महावीर वैयक्तिक स्वतन्त्रता के महान प्रवक्ता तथा सामुदायिक मूल्यों के महान संस्थापक थे। आर्थिक सामाजिक समता के लिए उन्होंने अपरिग्रह का मन्त्र दिया। परिग्रह, ममत्व, आसक्ति और लोभ से जीवन की सुख-शान्ति हवा हो जाती है। दीक्षा से पूर्व एक वर्ष तक वर्धमान महावीर ने प्रतिदिन १ करोड ८ लाख स्वर्ण मुद्राओं का दान किया। उन्होंने कहा - वस्तुओं के प्रति मूर्च्छा का भाव परिग्रह है। वस्तुएँ होने पर आसक्ति होना भी सम्भव है। इसलिए धन-धान्य, उपभोग - परिभोग की वस्तुओं की मर्यादा करनी चाहिए । साधनों और संसाधनों का संयमित उपयोग प्रयोग करना चाहिए । स्वअर्जित धन का पारमार्थिक उपयोग भी करना चाहिए । आज के भोग, उपभोग और उपभोक्तावादी युग में वस्तुओं के सीमित और विवेकसम्मत उपयोग की महत्ती आवश्यकता है।

साधना और तीर्थ-स्थापना

तीस वर्ष की उम्र में दीक्षा लेकर साढ़े बारह वर्षों के दुर्धर साधना काल में भ. महावीर ने भयंकर कष्टों, उपसर्गों और परिषहों को पूर्ण समभाव से सहन किया। इतने लम्बे साधना काल में उन्होंने मात्र ३५० दिन आहार ग्रहण किया। कभी निरन्तर आहार नहीं किया। उपवास-काल में जल नहीं पिया। आत्मा का निरन्तर ध्यान किया। उनकी कोई तपस्या दो उपवास से कम नहीं है। आहार-संयम, कष्ट-सहिष्णुता और सतत् - ध्यान उनकी साधना की प्रमुख विशेषताएँ हैं। साढ़े बयालीस वर्ष की उम्र में कैवल्य-प्राप्ति के बाद तीर्थंकर महावीर ने तीर्थ की स्थापना करके धर्म-साधना को सामुदायिक प्रतिष्ठा प्रदान की। इससे अधिकाधिक आत्माओं का कल्याण सम्भव हुआ। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रहः इन पाँच नियमों का पूर्णरूपेण पालन करने वाले महाव्रती श्रमण-श्रमणी कहलाये तथा आंशिक रूप से इन व्रतों का पालन करने वाले अणुव्रती श्रावक-श्राविकाएँ कहलाए।

रत्नत्रय

भ. महावीर ने आचरण पर बहुत जोर दिया। बिना तपे खपे और साधना किए कुछ भी पाना सम्भव नहीं

है। जैन धर्म की साधना प्रक्रिया है सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चारित्र। सब कुछ सम्यक हों और सम्यक्त्व से विभूषित हों। दशवैकालिक सूत्र में आचरण को सम्यक् बनाने के लिए विवेक, ज्ञान और समझ की महत्ता बताई गई है। जानना अलग बात है और आचरण करना अलग बात। ज्ञान वही सार्थक है जो आचरण बने। ज्ञान को आचरण में परिणत करने के लिए जीवन को साधना पड़ता है, तपाना पड़ता है।

सम्यक–तप

भ. महावीर ने बारह प्रकार के तप बताये। इनमें उपवास, उनोदरी (भूख से कम खाना), रस परित्याग (सादा/सात्विक भोजन करना), कष्टों को समभाव से स्वीकार करना, इन्द्रियों को वश में रखना, अन्तरावलोकन करना, अपने दुष्कृत्यों और पापों का प्रायश्चित करना, गुणों–गुणियों का आदर/विनय करना, सेवा करना, स्वाध्याय करना, ध्यान / कायोत्सर्ग करना आदि सम्मिलित है। आहार–संयम से इन्द्रिय–संयम और स्वास्थ्य–रक्षण सम्भव है। कष्ट–सहिष्णुता से धैर्य और प्रतिरोधकता बढ़ती है। विनय से शिष्टाचार, स्वाध्याय से ज्ञानार्जन और वृत्तियों का परिष्कार होता है। भगवान महावीर के ध्यान के प्रयोग मौलिक और अद्‌भुत थे। वर्तमान में प्रचलित अनेक ध्यान पद्धतियों और प्रविधियों का उत्स उनकी ध्यान–साधना में प्राप्त होता है। वे जीवन की प्रयोगशाला के महान प्रयोगधर्मी वैज्ञानिक साधक थे।

सेवा :

भ. महावीर की साधना–पद्धतियाँ समग्र एवं बहुआयामी रही हैं। उनकी धर्म–साधना में अन्धविश्वासों और कोरे क्रियाकाण्डों का कोई स्थान नहीं है। 'उत्तराध्ययन–सूत्र' में वे कहते हैं – ''**पन्ना समिक्खए धम्मं**'' अपनी प्रज्ञा से धर्म की समीक्षा करो। प्रथम शिष्य इन्द्रभूति गौतम स्वामी के एक प्रश्न के उत्तर में तीर्थंकर महावीर कहते हैं– ''**जे गिलाणं पडियरइ से धन्ने**'' अर्थात जिसने दीन–दुखियों, रोगियों और उनके कष्टों को समझा है, उसने मेरे ज्ञान को समझा है। उन्होंने सेवा में अहिंसा और अहिंसा में सेवा की प्रतिष्ठा की। अहिंसा के साथ सेवा और सेवा में अहिंसा का विवेक होने से सेवा और अहिंसा, दोनों का महत्व बढ़ जाता है।

ब्रह्मचर्य और सदाचार

जीवन–साधना में एक और महत्वशाली मूल्य भ. महावीर ने जोड़ा, वह है – ब्रह्मचर्य। आगम–ग्रन्थों में ब्रह्मचर्य को सर्वोत्तम तप और उत्कृष्ट साधना बताया गया है। ब्रह्मचर्य को १८ हजार उपमाएँ दी गई हैं। आज नारी स्वतन्त्रता की बात की जाती है। भ. महावीर ने ब्रह्मचर्य के द्वारा मनोवैज्ञानिक ढंग से नारी स्वतन्त्रता के प्रमुख पक्ष – को पुष्ट किया। संसार भयावह चारित्रिक संकट के दौर से गुजर रहा है। सदाचार निरन्तर दुर्लभ होता जा रहा है। जनसंख्या और एड्स जैसी समस्याओं से मानव जाति पर संकट के बादल छाए हुए हैं। अमर्यादित, असामाजिक, अवैधानिक यौनाचार, पर–स्त्री/पर–पुरुष गमन तथा वैश्यागमन जैसे कुव्यसनों में फँसकर अनेक लोग अपना दुर्लभ जीवन नरकतुल्य बना रहे हैं। ऐसे विकट समय में ब्रह्मचर्य और सदाचार की उपेक्षा अत्यन्त खतरनाक साबित हो सकती है। समर्थ राष्ट्र और चरित्रवान नागरिकों के निर्माण के लिए ब्रह्मचर्य और सदाचार का अत्यधिक मूल्य है।

वैज्ञानिक दृष्टि :

अनन्त ज्ञानी महावीर तत्व–द्रष्टा, क्रान्त–द्रष्टा और सर्व–द्रष्टा थे। उन्होंने हमें वैज्ञानिक दृष्टि और वैज्ञानिक जीवन–शैली प्रदान की। सृष्टि के बारे में किसी ईश्वरीय कल्पना की बजाय उन्होंने स्पष्ट कहा कि सृष्टि अनादि और अनन्त है। जीव और अजीव विश्व के प्रमुखतम घटक हैं। उत्पाद, व्यय और धौव्य से सब कुछ बन–बिगड़ रहा हैं। द्रव्य की दृष्टि से कोई पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता और पर्याय की दृष्टि से

प्रतिपल परिवर्तन हो रहा है। नव-तत्वों का स्वरूप, षट्-द्रव्यों का निरूपण, कर्मवाद और वस्तु-स्वातन्त्र्य के सिद्धान्त वैज्ञानिक, तर्कपूर्ण और अकाट्य हैं। इस बात पर कोई भी गौरव कर सकता है कि कम्प्यूटर के आविष्कार में जैन-ग्रन्थ भी आधार बने थे। आचार्य हेमचन्द्र ने भ. महावीर की वैज्ञानिक दृष्टि को बड़े चातुर्य से व्यक्त किया - ''भगवन् ! आपने यथार्थ तत्व का प्रतिपादन किया, इसलिए आपके व्यक्तित्व में वह कौशल प्रकट नहीं हुआ, जो घोड़े के सींग उगाने वाले नव-पण्डित में हुआ है।''

अनेकान्त के प्रतिपादक

कोई व्यक्ति यह कहे कि उसने वर्धमान महावीर को पूरी तरह समझ लिया है तो समझना चाहिए कि या तो वह यथार्थ नहीं कह रहा है या फिर वह बहुत बड़ा आत्मज्ञानी है। वस्तुतः महावीर को समझना आसान नहीं। भला महासागर को अंजलि में कैसे भरा जाए? उनका ज्ञान अनन्त का ज्ञान है। उनका दर्शन अनन्त का दर्शन है। उनका जीवन अनन्त का जीवन है। प्रत्येक वस्तु अनन्त धर्मात्मक होती है। इस अनन्त को, सत्य के अनन्त रूपों को और अखण्ड सम्पूर्ण सत्य को सिर्फ सर्वज्ञ देख-समझ सकते हैं। किन्तु वे भी एक साथ उसे व्यक्त नहीं कर सकते हैं। सत्य को अनेक आयामों से देखने-समझने के लिए भ. महावीर ने अनेकान्त का प्रतिपादन किया। अनेकान्त की अभिव्यक्ति को, कथन-शैली को स्याद्वाद कहा गया।

अनेकान्त का सिद्धान्त भ. महावीर का असाधारण आविष्कार और अनुपम देन है। दार्शनिक, बौद्धिक और वैज्ञानिक जगत में अनेकान्त सर्वोपरि है तो सामान्य जीवन व्यवहार में भी अनेकान्त के बिना काम नहीं चल सकता। अनेकान्त, अनेक का अन्त करके एकता, अनाग्रह और समन्वय का पथ प्रशस्त करता है और सत्य के अनवरत अनुसन्धान की प्रेरणा देता है। अनेकान्त-सिद्धान्त के अध्ययन के फलस्वरूप डॉ. अल्बर्ट आइंस्टीन ने विज्ञान-जगत में सापेक्षता का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। सापेक्षता का सिद्धान्त अनेकान्त का वैज्ञानिक संस्करण है। धार्मिक-वैचारिक सहिष्णुता और समन्वय, समय की माँग है और आवश्यकता भी। अनेकान्त कदाग्रह और पन्थों की लड़ाई समाप्त करने का अचूक उपाय है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने कहा - ''अनेकान्त भारत की अहिंसा-साधना का चरमोत्कर्ष है।'' अनन्त विशेषताओं व सद्गुणों के पुंज तीर्थंकर महावीर के मानवता और दुनिया के लिए अगणित अवदान हैं। मेरे एक मुक्तक से उन्हें श्रद्धासिक्त प्रणति :-

सागर की गहराई से भी गहरा है जिनका ध्यान ।
आकाश की ऊँचाई से भी ऊँचा है जिनका नाम ।
घोर उपसर्ग, अपार कष्ट सहे समभावों से,
उन मृत्युंजयी कालजयी महावीर को प्रणाम । ●

सदाचार व सद्विचारांच्या माध्यमातून ५७ वर्षे
अखंडपणे जिनवाणी व जैन समाजाची सेवा करणारे
भारत वर्षातील एक लोकप्रिय मासिक - जैन जागृति